महान बनने के लिए अपने काम से प्यार करें

आपके पास सफल बनने के लिए एक सीमित समय है इसलिए सफल बनने के लिए दूसरों का पीछा मत कीजिए। अगर कुछ महान काम करना चाहते हैं तो वो करें, जिस काम से आपको प्यार है।

स्टीव जॉब्स

पत्रिका TV RAJASTHAN

दोपहर 2:00 कलांजलि

दोपहर 3:00 सक्सेस मंत्रा

शाम 7:30 यस मिनिस्टर

बिजनेस खबरें...

आईएए...

नारायण बने अध्यक्ष

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

मुंबई. एड की दुनिया में जाना माना नाम रमेश नारायण को एकमत से अंतरराष्ट्रीय विज्ञापन संघ (आईएए) का अध्यक्ष चुना गया है। नारायण के कैन्को एडवरटाइजिंग को 2014 में आईएए के हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया था। उसी साल एडवटरटाइजिंग एसो. ऑफ इंडिया द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड भी दिया गया था। 2015 में आईएए ने उन्हें ग्लोबल चैंपियन अवॉर्ड दिया।

इसके पहले नारायण एड. क्लब, एडवरटाइजिंग एजेंसी एसो. ऑफ इंडिया के अध्यक्ष, और ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन के निदेशक रह चुके हैं। दो साल से वे गोवा फेस्ट में एब्बी अवार्ड्स के गवर्निंग काउंसिल के चेयरमैन थे। नारायण फिलहाल बॉम्बे रोटरी क्लब के अध्यक्ष भी हैं। आईएए के पूर्व अध्यक्ष प्रदीप गुहा ने कहा कि नारायण का चुना जाना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है।

इनके साथ ही कार्यालय पदाधिकारियों में मेघा टाटा को, सीओओ बीटीटीआई, सकल मीडिया ग्रुप के सीईओ प्रदीप द्वीवेदी को उपाध्यक्ष, एनअदर आईडिया के फाउंडर जयदीप गांधी को मुख्य सचिव, हंगामा डीजिटल मीडिया एंटरटेनमेंट के सीईओ नीरज रॉय को कोषाध्यक्ष चुना गया हैं।

एनसीएलटी में...

102 कंपनियों ने दी सरकार को चुनौती

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

77 निदेशक ही अयोग्य ठहराने के फैसले के खिलाफ पहुंचे कोर्ट

02 लाख से अधिक निदेशकों को सरकार ने घोषित किया है अयोग्य

नई दिल्ली. इस साल जून से लेकर सितंबर महीने तक बंद की गई 2.24 लाख कंपनियों में से मात्र 102 कंपनियों ने ही केन्द्र सरकार के इस निर्णय के खिलाफ नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) का दरवाजा खटखटाया है। वहीं, अयोग्य ठहराई गई इन कंपनियों के दो लाख से अधिक निदेशकों में से सिर्फ 77 ने अयोग्य ठहराए जाने के इस फैसले को अदालतों में चुनौती दी है। सूत्रों के मुताबिक, मंत्रालय की सबसे बड़ी चिंता इस बात की थी कि ज्यादातर कंपनियां और निदेशक कहीं एनसीएलटी और कोर्ट में न पहुंच जाएं। कंपनी कार्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने पत्रिका से कहा, 31 अक्टूबर तक स्ट्रक-ऑफ किए जाने के फैसले के खिलाफ एनसीएलटी में सिर्फ 108 कंपनियों के पहुंचने और अयोग्य ठहराए गए दो लाख से निदेशकों में से सिर्फ 77 के फैसले को चुनौती देने से मंत्रालय ने राहत की सांस ली हैं। इससे यह साबित होता है कि इन कंपनियों और निदेशकों पर सरकार की कार्रवाई पूरी तरह से सही है।

सरकार को देंगी सलाह...

शमिका रवि आर्थिक सलाहकार परिषद में

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

नयी दिल्ली. शोध संस्थान ब्रूकिंग्स इंडिया की वरिष्ठ शोधार्थी शमिका रवि को प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद का अल्पकालिक सदस्य नियुक्त किया गया है। इस सलाहकार परिषद के अध्यक्ष नीति आयोग के सदस्य विवेक देबरॉय हैं।

पहले से ही नीति आयोग के प्रधान सलाहकार रतन वाटल परिषद के सदस्य हैं तथा अर्थशास्त्री सुरजीत भल्ला, रतिन रॉय और आशिमा गोयल इसके अल्पकालिक सदस्य हैं। रवि ब्रूकिंग्स इंडिया में विकास अर्थशास्त्र शोध के प्रमुख हैं। वह इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस के विजिटिंग प्रोफेसर भी हैं। वह वहां गेम थ्यॉरी एवं सूक्ष्म वित्तपोषण के पाठ्यक्रम पढ़ाती हैं। आर्थिक सलाहकार परिषद का मुख्य कार्य प्रधानमंत्री को विभिन्न आर्थिक मामलों में सलाह देने का होता है। परिषद प्रधानमंत्री द्वारा सौंपे गये आर्थिक या अन्य संबंधित मुद्दों पर विश्लेषण करेगा और उन्हें परामर्श देगा।

इसके अलावा वृहद आर्थिक महत्व के मुद्दों का समाधान और उसके बारे में अपने विचार से प्रधानमंत्री को अवगत भी कराएगा। परिषद इसके साथ ही प्रधानमंत्री द्वारा समय-समय पर दिये गये अन्य कार्यों को भी देखेगा।

चाइल्ड प्लान से बच्चे का भविष्य सुरक्षित करना बेहद जरूरी

मानिक नांगिया,
डायरेक्टर मार्केटिंग एवं चीफ डिजिटल ऑफिसर, मैक्स लाइफ इंश्योरेंस

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

देश के सामाजिक आर्थिक विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह भारत के संदर्भ में और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दुनिया के ऐसे सबसे आशावादी राष्ट्रों में गिना जा रहा हैए जिसमें सरकार ने सुधारों और विकास का वादा किया है। यहां तक कि भारतीय शिक्षा बाजार जो वित्त वर्ष 2016.17 में 116.4 अरब अमरीकी डॉलर का था, वो 2020 तक 180 अरब अमरीकी डॉलर से दोगुनी हो जाने की उम्मीद है। निश्चित ही यह भविष्य के लिए सकारात्मक बात है, लेकिन कहानी का दूसरा पहलू यह है कि पिछले 7 वर्षों के भीतर भारत में शिक्षा की लागत दोगुनी हो गई है। वहीं अगले 15 वर्षों में यह मौजूदा लागत की चार गुनी हो जाएगी।

शिक्षा पर बढ़ते खर्च को ध्यान में रखें

बच्चों की शिक्षा पर खर्च करते समय पैसों की किल्लत न हो, इस बात को सुनिश्चित करने के लिए अधिकांश माता-पिता अपनी आय का एक हिस्सा बचाने पर भरोसा करते हैं। फिर भी उनमें से कई लोग अंततः ऊंची ब्याज दरों पर एजुकेशन लोन लेते हैं।

आरबीआई के मुताबिक शिक्षा की महंगाई दर लगातार 7 से 8 फीसदी के बीच बनी हुई है। इसका मतलब है कि जिस डिग्री की लागत आज 5 लाख रुपए है, आज से 20 साल बाद उसकी कीमत लगभग 20 लाख रुपए होगी।

अप्रिय घटना में मदद करेगी बीमित राशि

बेहतर चाइल्ड प्लन का चुनाव करते समया, ये जरूरी है कि आप उन पड़ावों को भी ध्यान में रखें, जो आपके बच्चे की शिक्षा के विभिन्न चरणों के दौरान आएंगे। इसलिए यह उचित है कि आप ऐसा प्लान लें जो लचीला हो और आपके बच्चे की शिक्षा से जुड़ी अप्रत्याशित जरूरतों के अनुसार बदला जा सके। अप्रिय घटना की स्थिति में लंप-सम अमाउंट या 5 साल तक बीमित राशि का 1 फीसदी मासिक भुगतान का भी विकल्प प्रदान करते हैं, जो कि शिक्षा के तत्काल खर्च में मदद करता है।

ऐसे प्लान परवरिश का बेहतर तरीका

चाइल्ड प्लान का चयन बच्चे की शिक्षा के विशिष्ट लक्ष्य को पूरा करने के लिए जरूरी अनुशासित बचत की आदत के लिए आपको प्रेरित करता है। आज की दुनिया में जहां शिक्षा के मायने पूरी तरह से नए हैं, यह जरूरी है कि आप ऐसे मैकेनिज्म से सुसज्जित हों, जो आपके बच्चे के संपूर्ण मानसिक और शारीरिक विकास को सुनिश्चित कर सके। ऐसे में आप सही चाइल्ड प्लान चुनकर, आप चिंता मुक्त रह सकते हैं और सबसे बेहतर तरीके से अपने बच्चे की परवरिश की ओर ध्यान लगा सकते हैं।

रिटायरमेंट के बाद पैसों की किल्लत से बचने के लिए...

युवावस्था से ही शुरू कर देनी चाहिए अपने बुढ़ापे की फिक्र

झरना अग्रवाल,
हेड - प्रोडक्ट, आनन्द राठी प्रेफर्ड

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

सेवानिवृत्ति की योजना बनाना कितना आवश्यक है? अथवा यह सवाल ज्यादा जरूरी है कि इसकी योजना बनाना कितना अनिवार्य है? क्या इसे कल पर टाला जा सकता है और इसके बजाय इस साल विदेशी यात्रा का आनंद उठाएं? दो परिदृश्यों में इसका क्या असर होगा? हममें से अधिकतर लोग सोचते हैं कि हमें युवावस्था में जिंदगी का आनंद उठाना चाहिये और सेवानिवृत्ति की योजना के लिए अभी बहुत समय है। हमारा आम जीवन चक्र यह होता है कि कॉर्पोरेट लाइफ की शुरुआत करें, पैसा कमाएं, और खुद पर तथा परिवार पर खर्च करें। यह कई सालों तक जारी रहता है और एक आदत बन जाता है। जैसे जैसे सैलरी बढ़ती है, उसके अनुसार हमारे खर्च भी बढ़ते जाते हैं लेकिन बचत बमुश्किल ही बढ़ पाती है।

बचत के लिए नियोजन और निवेश पहले

यदि आपकी सालाना आमदनी 12 लाख रुपए है और आपके जरूरी खर्चे 7.2 लाख रुपए हैं (आपकी आय का 60 प्रतिशत), तो क्या आप शेष 4.8 लाख रुपए निवेश कर रहे हैं। अथवा बैंक में पड़ी राशि ऐसे खर्चों में जा रही है जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है। बचत के लिए नियोजन एवं निवेश सबसे पहले आना चाहिए और फिजूल के खर्चे बाद में। जब बचत करना एक आदत बन जाती है तो धीरे-धीरे बचत का प्रतिशत बढ़ाते जाएं। हालांकि, बचत के जितना ही निवेश करना भी महत्वपूर्ण है। जितना जल्दी आप बचत व निवेश करना शुरू करेंगे, आपको निवेश को बढ़ाने का अधिक समय मिलेगा और आपके पास रिटायरमेंट के समय ज्यादा धनराशि होगी।

जोखिम उठाने की क्षमता पर भी ध्यान दें

निवेश करते समय उत्पादों के सही मिश्रण का चुनाव करना चाहिए। इसमें अपने जोखिम उठाने की क्षमता का भी ख्याल रखा जाना चाहिये। महंगाई जोखिम से अपने धन को यदि सुरक्षित रख रहे हैं तो न्यूनतम रिटर्न मिलेगा। वहीं यदि आप बाजार की अस्थिरता को लेकर सहज हैं तो लंबे समय में म्यूचुअल फंडों का प्रदर्शन बेहतर रहेगा। हम म्यूचुअल फंडों में 12-18 प्रतिशत प्रतिवर्ष की रेंज में बेहतर रिटर्न की उम्मीद कर सकते हैं।

आज के आराम से न करें समझौता

रिटायरमेंट के बाद भी अपनी जिंदगी के पहले की तरह बरकरार रखने के लिए, आपको आज के आराम से बहुत ज्यादा समझौता नहीं करना चाहिये। लेकिन इसी समय आज किसी राजा की तरह जीने और फिर सेवानिवृत्ति के बाद भिखारी बनना भी समझदारी की बात नहीं है।

तो अब सवाल यह उठता है कि रिटायरमेंट प्लानिंग आरंभ करने का आखिर सही समय क्या है?

रिटायरमेंट के बाद भी कम नहीं होता खर्च : आइये एक स्थिति की कल्पना करते हैं। आप 60 साल के हैं और आज आपका सेवानिवृत्त होने का दिन है। कल से आपको कोई मासिक सैलरी नहीं मिलेगी, लेकिन आपके खर्चे वही बने रहेंगे और समय के साथ इनमें बढ़ोतरी ही होगी। ऐसे में सवाल उठता है कि आपने कितनी राशि जमा की है और रिटायरमेंट के बाद खर्च करने वाले हैं।

भविष्य की जरूरतों के लिए...

ऐसे निर्धारित करें बचत का लक्ष्य

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

आज के समय में सबसे ज्यादा बुनियादी सवाल यह है कि हमें कितना पैसा बचाना चाहिए। ज्यादातर लोगों से जब यह पूछा जाता है कि वे कितना धन बचाएंगे, तो वे सिर्फ अनुमान लगाते हैं। कुछ कारक ऐसे हैं जिनके आधार पर कोई शख्स अपने धन को लेकर फैसला करता है। इन कारकों में शामिल हैं- जीवनयापन का खर्च, पारिवारिक रचना, खर्च करने का पैटर्न, दीर्घकालिक कमाई की क्षमता आदि। एक सर्वमान्य नियम यह है कि अपनी आय का कम से कम 25 प्रतिशत हिस्सा बचाया जाना चाहिए और धीरे-धीरे इसे बढ़ाना चाहिए, जब तक कि पर्याप्त राशि जमा न हो। अब सवाल यह है कि शुरुआत कैसे करें और पैसा कहां लगाया जाना चाहिए आइए, इसे समझने की कोशिश करते हैं।

बजट एक अनुशासन है : बचत का आकलन करने के लिए पहला कदम मासिक बजट बनाना है। आप कितनी कमाई करेंगे, इसका पता लगाएं और फिर यह तय करें कि आप इसे कहां खर्च करना चाहते हैं। ऐसे गैर जरूरी खर्चों की लिस्ट बनाएं, जिन्हें कम किया जा सकता है।

बचत से पहले चुकाएं कर्ज

यदि आप एक कर्ज में फंसे हुए हैं, तो ऐसी स्थिति में अपने बचत बैंक से मिलने वाले ब्याज की कमाई को भी आप मिटा देंगे। इसलिए समय से अपने ऊपर क्रेडिट कार्ड या अन्य उच्च ब्याज कर्ज का भुगतान कर दें

महंगाई से लड़ने वाले प्रोडक्ट में निवेश करें

बचत खाते की प्रवृत्ति आपको नुकसान दे सकती है। इसलिए ऐसे प्रोडक्ट में निवेश करें जो की भविष्य में आने वाले महंगाई से लड़ने में सक्षम हो।

6 से 12 महीनों की बचत

आपके बचत खाते में कितना रकम हो, ये आपके जीवनशैली पर निर्भर करती हैं। लेकिन आपकी जिंदगी अधिक अनिश्चित होती है या घर के अन्य लोग आप पर निर्भर करते हैं, तो आपके बचत खाते में 6 से 12 महीने के खर्च के लिए रकम होनी ही चाहिए।

निवेश के लिए ई-केवाईसी पंजीकरण के साथ...

ऐसे उठाएं टैक्स बचत का लाभ

अर्चित गुप्ता,
सीईओ - क्लियरटैक्स

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

म्युचुअल फंड्स में निवेश करना चाहते हैं, लेकिन पूरी केवाईसी प्रक्रिया से गुजरने का समय नहीं है? क्लिअरटैक्स ने प्रयोक्ताओं के लिए अपने प्लेटफार्म पर ई–केवाईसी पंजीकरण फीचर को शुरू किया है। **निवेश का विकल्प:** यह प्लेटफार्म सबसे अच्छे म्युचुअल फंड्स के विकल्पों का पोर्टफोलियो सुझाता है, जिन्होंने पिछले 5–10 सालों के समय में लगातार अच्छा परफॉर्म किया है।

एक से दूसरे म्युचुअल फंड में निवेश की सुविधा : अगर किसी निश्चित फंड ने अच्छा परफॉर्म नहीं किया है, तो क्लिअरटैक्स इसके बारे में भी सुझाव देता है। इस वेबसाइट द्वारा एक म्युचुअल फंड से दूसरे में जाने की सुविधा भी दी जाती है।

कागज रहित पंजीकरण की सुविधा

क्लिअरटैक्स पर ईकेवाईसी फीचर के साथ, प्रयोक्ता बेहतर परफॉर्म कर रहे म्युचुअल फंड्स और टैक्स की बचत करने वाली योजनाओं में से चुनाव कर सकते हैं, जिससे की उन्हें ज्यादा लाभ मिल सके।

गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थान...

आपको कर्ज देने के लिए ऐसे करते हैं एनपीए कम

रचित चावला,
सीईओ - फिनवे कैपिटल

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

एनबीएफसी एनपीए के प्रबंधन में बैंकों से आगे हैं

भारतीय वित्तीय क्षेत्र में गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) ने मजबूत जड़ें बनाई हैं। ये वित्तीय संस्थान जनसंख्या के आला वर्गों का लक्ष्य रखते हैं और अधिकतर छोटे व्यवसायों या वेतनभोगी कर्मचारियों को उनकी क्षणिक जरूरतों में मदद करते हैं।

बैंकों और बीमा कंपनियों के बाद, एनबीएफसी भारतीय वित्तीय प्रणाली में नंबर 3 पर आते हैं। एक तरफ बैंकों ने पिछले वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही में कर्जों के आवंटन में सिर्फ 5.1 प्रतिशत की ही वृद्धि की वहीं गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों ने बैंकों की तुलना में 250 प्रतिशत की कर्ज आवंटन वृद्धि दर्ज की है।

आरबीआई के एक हालिया अध्ययन के अनुसार, एनबीएफसी गैर-परफॉर्मिंग एसेट्स (एनपीए) के प्रबंधन में वाणिज्यिक बैंकों से बहुत आगे हैं, और उनकी संपत्ति की गुणवत्ता बैंकों की तुलना में कहीं ज्यादा बेहतर है।

मिडिल क्लास के लिए बेहतर विकल्प

भारत के मध्यवर्गीय क्षेत्र की मांग और आकांक्षाएं तेजी से बढ़ रही हैं और लैपटॉप, स्मार्टफोन, और एलईडी टीवी जैसे गैजेट्स देश के शहरी संस्कृति में लगभग हर घर की आम जरूरतें हैं। उनकी मासिक आय इन वस्तुओं को एक मुश्त खरीदने की अनुमति नहीं देती है और बैंक से एक निजी कर्ज लेने में काफी समय लगता है और साथ ही यह महंगा भी होता है। इसलिए, एनबीएफसी उनके लिए त्वरित और सरल प्रक्रियाओं के माध्यम से कर्ज लेने का सबसे अच्छा विकल्प है।

घटते एनपीए के लिए ये हैं जिम्मेदार

आज, अधिकांश एनबीएफसी संभावित ग्राहकों के व्यवहार का अध्ययन करते हैं। एनबीएफसी कर्ज लेने वाले व्यक्तियों की प्रोफाइल, इतिहास और लेनदेन प्रक्रिया से संबंधित दस्तावेजों की डिजिटली और पूरी तरह से एक विस्तृत जांच करते है, जो रियल-टाइम बैंक स्टेटमेंट, पैन नंबर और ईकेवाईसी चेक, ब्यूरो रिपोर्ट्स और सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर मौजूद आपके जानकारी के आधार पर क्रेडिट स्कोर को अंतिम रूप देने और संबद्ध जोखिम कारकों की गणना में बहुत मदद करती हैं।

अतिरिक्त लाभ भी

एनपीए को कम करने में एनबीएफसी की मदद करने वाली तकनीक ही एकमात्र कारक नहीं है, कई अन्य संरचनात्मक, संचालन और रणनीतिक प्रोत्साहन भी हैं जो एनपीए के अनुपात में कटौती करने में सक्षम हैं। पारंपरिक रूप से, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां बाजार से उधार के रूप में 50 प्रतिशत धनराशि उठाती हैं और बाकी 50 प्रतिशत राशि बैंकों से प्राप्त करती हैं। आमतौर पर, मालिकों-प्रबंधकों के पास ही कंपनी में असली हिस्सेदारी होती है जो उन्हें बाहरी हितधारकों के अनावश्यक दबाव से बचाती है।

दोहरी योजना नीति के माध्यम से ऐसे करें...

एसआईपी और एसडब्ल्यूपी से पूरा करें वित्तीय लक्ष्य

श्रीमती अनुराधा राव,
एमडी और सीईओ, एसबीआई म्यूचुअल फंड

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

वित्तीय नियोजन का महत्व केवल किसी अप्रत्याशित घटना के दौरान या फिर सेवानिवृत्ति के बाद समझा जाता है, जब नकदी प्रवाह कम हो जाता है। जबकि वित्तीय योजना आपको सार्थक वित्तीय निर्णय लेने और दीर्घकालिक और अल्पकालिक वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में आपकी सहायता कर सकती है। वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सुनियोजित निवेश योजना (एसआईपी) और सुनियोजित आहरण योजना (एसडब्ल्यूपी) की दोहरी नीति को अपनाने की सलाह दी जाती है। अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए व नियमित नकदी प्रवाह उत्पन्न करने के लिए आप अपने मौजूदा म्यूचुअल फंड निवेश से पूर्व-निर्धारित अंतराल पर पैसे निकाल सकते हैं। इसी कारण, सेवानिवृत्ति योजना बनाने वाले व्यक्ति अक्सर सेवानिवृत्ति के बाद आय के स्तर में वृद्धि करने के लिए सुनियोजित आहरण योजना का विकल्प चुनते हैं।

दोनों ही स्थिति में फायदेमंद

ये दोहरी नीति उन सभी लोगों के लिए उपयुक्त है जो अपनी मासिक वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आय का एक निश्चित स्रोत तलाशते हैं। समय के हिसाब से वित्तीय उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सुनियोजित निवेश योजना में निवेश करना अच्छी सलाह है, क्योंकि जब एक निवेशक बाजार में निवेश करने के लिए सही समय चुनता है, तो आम तौर पर उससे कुछ छूट हो जाती है या फिर गलत समय पर बाजार में प्रवेश करता है। एसडब्ल्यूपी आपको एक निश्चित अवधि में और अधिक रिटर्न अर्जित करने की क्षमता देती है।

पारंपरिक निवेश से बेहतर है

एफडी और अन्य पारंपरिक निवेश के विकल्पों के ब्याज दरों में गिरावट देखी जा रही है। इसलिए, बैंक की सावधि जमा के मुकाबले म्युचुअल फंड जैसे निवेश के अवसरों को देखना ज्यादा समझदारी है। जो कि मुद्रास्फीति से काबू पाने में मदद करता है और टैक्स बचाता है। हालांकि, यह याद रखना चाहिए कि एसडब्ल्यूपी पर्याप्त राशि होने पर अद्भुत तरीके से काम करता है। अधिकतम लाभ और वापसी के लिए हमेशा एक बड़ी वित्तीय राशि संगृहित करने का प्रयास होना चाहिए।

मिलेगा वित्तीय उद्देश्यों का रास्ता

एसआईपी और एसडब्ल्यूपी की दोहरी नीति आपको दूसरे वित्तीय उद्देश्यों को पूरा करने के रास्ता दे सकती है। आप दीर्घकालिक मौद्रिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ ही अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को संतुलित कर सकते हैं, वहीं इन दोनों को एक साथ प्रयोग करके, औसतन रुपए की कीमत, मुद्रास्फीति होने के बावजूद भी लाभ प्राप्त, और निवेश करते हैं।